# तेरी तृष्णा | By Riyaz Hindustani

पड़े रहे सब रंगले बंगले...
खाली बारा धरी रह।।
जोड़ जोड़ भर लिए ख़ज़ाने,
जोड़ जोड़ भर लिए ख़ज़ाने..
तेरी तृष्णा अड़ी रह।।
पड़े रहे सब रंगले बंगले...
खाली बारा धरी रह।।

इक ब्रम्ह्मण का हाल सुनो जजमान के घर जाता था
नाहा धोये के नदी किनारे गायत्री मंत्र चलाता था
लगा तमाचा मौत का ऐसा ,लगा तमाचा मौत का ऐसा
हाथ में माला पड़ी रही।।
पड़े रहे सब रंगले बंगले...
खाली बारा धरी रह।।

ऊंचे महल पर एक स्त्री चढ़ी श्रृंगार बनाने को
हरी सलाई सुरमे वाली आँख में सुरमा पाने को
काल गुलेल लगी पीछे से, काल गुलेल लगी पीछे से
सुरमेदानी पड़ी रही।।
पड़े रहे सब रंगले बंगले...
खाली बारा धरी रह।।

इक लाला जो बांध के चोरा हट्टी ऊपर बैठ गए
इतने में एक चक्कर आया पाँव पसार के लेट गए
पूछ कर गया लिखने वाला, पूछ कर गया लिखने वाला
कलम कान में अड़ी रही।।
पड़े रहे सब रंगले बंगले...
खाली बारा धरी रह।।

इक बाबूजी सैर करन को गाड़ी पर असवार हुए
गाडी अभी चलने नहीं पायी बाबूजी ठन्डे ठार हुए
लगा तमाचा अजल का ऐसा, लगा तमाचा अजल का ऐसा
सड़क पर तमतम कड़ी रही।।
पड़े रहे सब रंगले बंगले...
खाली बारा धरी रह।।

गौरी शंकर चेतो प्राणी झगडे और फिसाद तजो
क्या रखा है इन झगड़ो में मस्त रहो भगवान् भजो
खिले कमल मिट गए चमन में,खिले कमल मिट गए चमन में
ना कोई फुलझड़ी रही।।
पड़े रहे सब रंगले बंगले...
खाली बारा धरी रह।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a4%e0%a5%87%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%a4%e0%a5%83%e0%a4%b7%e0%a5%8d%e0%a4%a3%e0%a4%be-by-riyaz-hindustani/